कुछ रास्ते, कुछ रिश्ते - सुकन्या दत्ता

कुछ रास्ते बदल गए
कुछ रिश्ते टूट गए
किसी का जाना ज़रूरी था
तो कोई यूँ ही रूठ गए
भरी महफ़िल में हाथ छोड़ा किसी ने
तो शर्म के मारे हम लूट गए

अचानक बारिश में क़दमों को
डगमगाते हुए देखा है हमनें
सूखे पत्तों पर पलों को
लड़खड़ाते हुए देखा है हमनें
कई बार ऐसा लगा कि
हो जायेंगे वह अपने मगर
एक हवा का झोंका आया
और सारे उनके साथ हो गए

दिन के उजाले में रातों को
शरमाते हुए देखा है हमनें
ख्वाहिशों की मंजिल में एहसास को
घबराते हुए देखा है हमनें
अरमानों के बाग़ों में
कई बार फूल खिले हैं मगर
सुलगते सीने में जल कर
बेवक़्त वे राख़ हो गए